लहरों का स्वागत

ईशा सरदेसाई द्वारा पुनर्लिखित

लहर पानी के पास बैठी थी और लहरों को तट पर बिखरता हुआ देख रही थी। रेत तक पहुँचते-पहुँचते लहरें इतनी छोटी हो जातीं कि शायद ही वे सतह पर अपना कोई निशान छोड़ पातीं। परन्तु वहाँ, उस अनन्त नीले महासागर में वे बहुत बड़ी और शक्तिशाली होतीं। लहर ने अपनी आँखें बन्द कीं और दूर से आती इन विशाल तरंगों की कल्पना करने लगी — किस तरह पानी के मन्थन द्वारा इन तरंगों का उद्भव होता होगा और कैसे ये ऊपर उठकर आकाश की ऊँचाईयों को छू लेती होंगी।

लहर ने एक गहरी सांस ली। वह एक नर्तकी थी, और जब बात उसकी कला की हो तो वह उसमें सर्वथा कुशल व निपुण थी। जब वह अकेली होती, या जब केवल वह और उसके शिक्षक होते, तो ऐसा लगता जैसे उसके कौशल की कोई सीमा न हो। वह पूरे कमरे में गोल घूमती, उसके अन्दर जो भी सुर-ताल बज रहे होते वह उनके साथ एकलय हो जाती। लगातार बदलती उसकी मुद्राओं में एक सन्तुलन होता — तीव्रता और सौम्यता का, कोरी शक्ति और उत्कृष्ट लावण्य का।

परन्तु जब वह, दस या बीस या —फिर जिसके बारे में सोचकर भी वह भयभीत हो जाती — *सैकड़ों* लोगों के सामने, रंगमंच पर आती तो कुछ बदल जाता। अचानक उसका ध्यान उन लोगों की ओर चला जाता जिनकी नज़रें बस उस पर ही टिकी होतीं। वह कल्पना करने लगती कि लोग उसके बारे में क्या सोच रहे होंगे; वह कहानियाँ बनाने लगती कि इतने बड़े और गुफा जैसे मंच पर उसे अकेला खड़ा देखकर उन्हें कैसा लग रहा होगा। जब वे ग़ौर से उसकी ओर देखते तो उसे ऐसा लगता जैसे कि उसके शरीर पर कोई भारी बोझ लाद दिया गया हो और उसके कन्धे, उसके हाथ और उसके पाँव उस बोझ तले दबे जा रहे हों। और जब वह नृत्य करने के लिए यही पाँव उठाती, तो उसने जिन मुद्राओं का रियाज़ किया होता, उनमें से एक भी मुद्रा ठीक से नहीं हो पाती। वह लय-ताल, जो एक समय पर वातावरण के कण-कण में उसके साथ होती थी, अब अचानक उसकी पहुँच से बाहर हो जाती। चली जाती — छू-मन्तर हो जाती।

समुद्र की लहरें, तट से टकरा रही थीं। विश्व के इस एकान्त, तटवर्ती इलाके में जहाँ वह रहती थी, रेत में गुलाबी रंग की एक झलक थी; कितने सारे शंख, सीपियों और खनिज पदार्थों के रूप में प्रवाल के अवशेष यहाँ बिखरे हुए थे।

तभी, उसके पीछे से आती, एक आवाज़ सुनाई दी।

“लहर? क्या वह तुम हो?”

लहर ने मुड़कर देखा तो उसकी शिक्षिका, उसकी ओर चली आ रही थीं। ये शिक्षिका, असामान्य लालित्य व गरिमावान व्यक्तित्व की महिला थीं, उनका कद लम्बा व वैभवशाली था, उनकी चाल-ढाल पानी जैसी तरल व सहज थी।

“तुम क्या सोच रही हो?” शिक्षिका ने लहर के नज़दीक आते हुए पूछा।

लहर ने ठण्डी साँस भरते हुए कहा।

“यह मेरे बस की बात नहीं है। मैं लोगों के सामने नृत्य नहीं कर सकती। मुझे लगने लगा है कि मैं ऐसा कभी नहीं कर पाऊँगी।”

“तुम्हें ऐसा क्यों लगता है?” शिक्षिका ने पूछा।

“क्योंकि बार-बार, कई-बार ऐसा ही तो हुआ है,” लहर ने कहा। “हर बार जब मैं नृत्य करने के लिए मंच पर जाती हूँ तो मेरी ताल भंग हो जाती है। मैं नृत्य की मुद्राएँ और भाव-भंगिमाएँ भूल जाती हूँ।”

उसकी शिक्षिका पानी की ओर एकटक देखने लगीं।

“क्या यही है जो तुम भूल रही थी?” उन्होंने मन्द स्वर में पूछा। “तुम्हारी मुद्राएँ और भाव-भंगिमाएँ?”

शिक्षिका ने मुड़कर लहर की ओर देखा। उन्हें उसके चेहरे पर उलझन के भाव दिखाई दिए। उन्होंने कहा “शायद, यह सोचने की जगह कि क्या गलत हुआ, तुम अपना ध्यान . . . कहीं और ले जा सकती हो।”

“कहीं और?” लहर ने दोहराया। “पर — कहाँ? मैं बस यही सोच पा रही हूँ कि मैं मंच पर कितनी घबरा जाती हूँ।”

“तुम्हारा नाम लहर है,” शिक्षिका ने कहा। “इसका क्या अर्थ होता है?”

“इसका अर्थ है . . . *समुद्र की लहर,*” लहर ने उत्तर दिया। “जैसे महासागर की महान लहर।”

“हाँ,” शिक्षिका ने कहा। “महान लहर। तुम उनके बारे में सोचने की कोशिश क्यों नहीं करती?” उन्होंने लहर का कन्धा सहलाया और वहाँ से चली गईं।

लहर विचार करने लगी कि उसकी शिक्षिका ने क्या कहा था।

मेरा नाम, उसने सोचा। *लहर। महान लहर।*

उसने अपनी आँखें बँद कीं और वह अपने श्वास-प्रश्वास के सुपरिचित, सुखमय प्रवाह में डूब गई। उसने ध्यान दिया कि किस तरह उसका प्रवाह लहरों के उठने, गिरने और सौम्यता से बिखरने के साथ एकलय हो रहा था। *मैं लहर हूँ,* उसने सोचा। *महान लहर।*

लहर खुद से बातें करने लगी, उसने ये शब्द दोहराने शुरू कर दिए। *मैं लहर हूँ, मैं लहर हूँ, मैं महान लहर हूँ।* कभी-कभी उसका मन बह जाता और मंच की तस्वीर फिर से उसकी आँखों के सामने आ जाती। या उसे यह याद आ जाता कि किस तरह सभी लोगों की आँखें उस पर टिकी हुई हैं, और उसकी त्वचा में सिहरन पैदा होने लगती, उसे कुछ भी समझ आना बन्द हो जाता, मानो कोई उसे कह रहा हो — कि *वह* — सुरक्षित नहीं है। और ऐसे क्षणों में वह अपने श्वास-प्रश्वास पर वापस आ जाती। वह नाम पर, अपने नाम पर वापस आ जाती।

मैं लहर हूँ। मैं महान लहर हूँ।

कुछ समय बाद, उसे हर चीज़ में केवल ये लहरें ही दिखाई देने लगीं, फिर चाहे उसकी आँखें खुली होतीं या बन्द। ये पहले छोटी तरंगों जैसी होतीं और फिर ये महान लहर बन जातीं। ये विशालकाय थीं, हवा में तेज़ी से उठतीं और चंचलता से हिलोरे भी खातीं, हर बार जब पानी अपने आप में से उठता, हर बार जब वह तट की ओर कलाबाज़ी खाता तो वह आनन्दित हो उठता।

लहर के मन की मूँगिया रेत पर पानी हिलोरे खाता हुआ तब तक आगे बढ़ता रहा, जब तक कि वे महान लहरें उसकी ओर नहीं आने लगीं। उनसे बच पाना असम्भव था। वे उसकी ओर बढ़ीं — आशीर्वाद और प्रचण्डता के साथ, उसकी सत्ता को निर्मल करते हुए, उसके मन की पीड़ा को हरते हुए, जन्म-जन्मान्तरों की उस धूल को साफ़ करते हुए जो किस्मत के किसी फेर से या व्यक्तित्व की किसी मज़बूत जकड़न के कारण वहाँ जम गई थी।

वह महान प्रेम भी उसकी ओर बढ़ा — और पहली बार, उसने उसे आने दिया। एक के बाद एक, उसकी ओर बढ़तीं, प्रेम की इन लहरों के शिखर सूर्य की किरणों से जगमगा रहे थे और सागर की गहराई तक प्रकाश बिखेर रहे थे। लोरी की तरह ये लहरें, उसकी साँसों के साथ हिलोरे खा रही थीं। उसका मन निश्चल और शान्त था। उसका हृदय — वह उसे महसूस कर पा रही थी! उसके सीने में एक महान

और उज्ज्वल हृदय जगमगा रहा था, उसकी हर धड़कन के साथ उसकी सत्ता में उत्साह और जोश का झरना फूट रहा था। उसका ध्यान अब तक इस ओर क्यों नहीं गया था?

और, स्थान से परे इस स्थान में, समय से परे इस समय में, उसे कुछ भी साबित करने की ज़रूरत नहीं थी। उसे कुछ भी बनना नहीं था। उसे अपनी कहानी के अलावा किसी और कहानी की आवश्यकता नहीं थी — वह कहानी जिसे वह अभी, इस पल जी रही थी। बस वह थी और अनन्त सागर था, और वह *ख़ुद* ही यह अनन्त सागर थी। वह यह थी, वह 'वह' थी, वह पिघलता हुआ सूरज थी।

लहर ने अपनी आँखें खोलीं। वह अपनी जगह से उठी, उसका शरीर उसके सामने तैर रहा था, फिर भी वह पूरी तरह उसके आदेश का पालन कर रहा था। समय होने ही वाला था।

वह तेज़ी-से नृत्य कक्ष की ओर बढ़ी और वहाँ पहुँचते ही मंच पर चली गई। लोग — उसके दर्शक — वहाँ एकत्रित हो चुके थे, क्योंकि उन्हें भी पता था कि समय हो गया है।

जब लहर ने मंच की ओर देखा तो वह जो देख पा रही थी, वह था सिर्फ़ प्रकाश। प्रकाश ऊपर से जगमगा रहा था, नीचे से प्रकाश की किरणें आ रही थीं, सब ओर प्रकाश ही प्रकाश था। लहर ने अपने बाल बाँधे और अपने घँघरू पहन लिए। उसने एक गहरी साँस अन्दर ली, और फिर — बिना हिचकिचाए, बिना रुके, इतनी मुश्किल से मिली इस समझ के साथ कि वह किस लिए बनी है और क्या उसके लिए बना है — वह प्रकाश में उतर गई। ऐसा लग रहा था कि कहीं स्वर्ग से, संगीतकार संगीत बजाने लगे हो।

लहर की बाहें स्वतः ही ऊपर उठ गईं। उसकी हथेलियाँ, किसी मुद्रा की रचना करते हुए खुलीं, बन्द हुईं और फिर खुलीं। उसके पाँव ज़मीन पर तैरने लगे। कानों में अभी-भी पानी की आवाज़ लिए, अपने अन्दर प्रेम की उमड़ती हुई लहरें लिए, वह नृत्य करने लगी।

© २०१९ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

यह कहानी ज़ेन बुद्ध परम्परा के एक क्लासिक कोआन से प्रेरित है।